NEERAJ®

भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा

B.H.D.C.-108

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: Sanjay Jain, M.A. (Hindi), B.Ed.

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 300/-

Content

भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा

Question Paper–June-2024 (Solved) 1
Question Paper–December-2023 (Solved) 1
Question Paper–June-2023 (Solved) 1
Question Paper–December-2022 (Solved) 1
Question Paper–Exam Held in July-2022 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा-1

1. भाषा : परिभाषा तथा विशेषताएं 1
2. हिंदी भाषा का विकास 12
3. भाषा विज्ञान तथा उसके अंग 22
4. स्वनविज्ञान 32
5. स्वनिम विज्ञान 47
6. रूप विज्ञान 60
7. रूपिम विज्ञान 72

भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा-2

8. सरल वाक्य और संयुक्त वाक्य 82

9. मिश्र वाक्य 95

10. अर्थ विज्ञान 103

11. हिंदी की बोलियां 119

12. हिंदी भाषा का स्वरूप और भूमिकाएं 130

13. संविधान में हिंदी संबंधी उपबंध 138

14. राजभाषा अधिनियम और आदेश 146

15. देवनागरी लिपि और उसकी विशेषताएं 155

16. देवनागरी लिपि का मानकीकरण 163

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा **B.H.D.C.-108**

समय : 3 घण्टे **अधिकतम अंक : 100**

नोट : *किन्हीं* ***पाँच*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. हिंदी भाषा के विकास का परिचय दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-12, 'हिंदी भाषा का विकास'

प्रश्न 2. व्यंजन ध्वनियों के वर्गीकरण के विधिक आधारों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-35, 'व्यंजनों का वर्गीकरण'

प्रश्न 3. शब्द के भेदों का विस्तार से विवेचन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-6, पृष्ठ-61, 'शब्द के भेद'

प्रश्न 4. वाक्य की परिभाषा देते हुए उसका स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-8, पृष्ठ-82, 'वाक्य की परिभाषा, स्वरूप और अनिवार्य तत्व'

प्रश्न 5. संकेतग्रह का अर्थ स्पष्ट करते हुए उसके साधनों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-10, पृष्ठ-103, 'संकेतग्रह', पृष्ठ-104, 'संकेतग्रह के साधन'

प्रश्न 6. पूर्वी हिंदी की बोलियों का उदाहरण सहित विवेचन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-11, पृष्ठ-119, 'पूर्वी हिंदी की बोलियां'

प्रश्न 7. देवनागरी लिपि के मानकीकरण की आवश्यकता के कारणों की उदाहरण सहित विवेचना कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-16, पृष्ठ-163, 'देवनागरी लिपि का मानकीकरण'

प्रश्न 8. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियां लिखिए–

(क) अनुस्वार और अनुनासिकता में अंतर

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-37, 'अनुस्वार और अनुनासिक में अंतर'

(ख) स्वर्निम, शब्द और रूपिम

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-72, 'स्वनिम, शब्द और रूपिम'

(ग) संज्ञा उपवाक्य के प्रकार

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-9, पृष्ठ-95, 'संज्ञा उपवाक्य'

(घ) कार्यांग में राजभाषा

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-13, पृष्ठ-140, 'कार्यांग में राजभाषा'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा **B.H.D.C.-108**

समय : 3 घण्टे **अधिकतम अंक : 100**

नोट : *किन्हीं* ***पाँच*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. आधुनिक काल में हिंदी के स्वरूप और विकास पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-13, 'आधुनिक काल में हिंदी'

प्रश्न 2. व्यंजनों के वर्गीकरण के विविध आधारों का विस्तृत परिचय दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-35, 'व्यंजनों का वर्गीकरण'

प्रश्न 3. पद के भेदों का उदाहरण सहित विवेचन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-6, पृष्ठ-61, 'पद के भेद या पद-विभाग'

प्रश्न 4. संयुक्त वाक्य के विविध प्रकारों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-8, पृष्ठ-86, 'संयुक्त वाक्य का स्वरूप'

प्रश्न 5. क्रियाविशेषण उपवाक्य की संरचना को स्पष्ट करते हुए उसके विविध भेदों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-9, पृष्ठ-97, 'क्रियाविशेषण उपवाक्य'

प्रश्न 6. पूर्वी हिंदी की बोलियों का परिचय दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-11, पृष्ठ-119, 'पूर्वी हिंदी की बोलियां'

प्रश्न 7. देवनागरी लिपि के गुण एवं दोषों की विवेचना कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-15, पृष्ठ-156, 'देवनागरी लिपि : गुण/दोष'

प्रश्न 8. निम्नलिखित विषयों में से किन्हीं दो पर टिप्पणियां लिखिए–

(क) कार्यांग में राजभाषा

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-13, पृष्ठ-140, 'कार्यांग में राजभाषा'

(ख) खड़ी बोली

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-13, 'खड़ी बोली का विकास'

(ग) संकेतग्रह के बाधक कारण

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-10, पृष्ठ-105, 'संकेतग्रह के बाधक कारण'

(घ) स्वनिम, शब्द और रूपिम

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-72, 'स्वनिम, शब्द और रूपिम'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा

भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा-1

भाषा : परिभाषा तथा विशेषताएं

1

परिचय

भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा हम अपने विचारों को व्यक्त कर सकते हैं और इसके लिए हम वाचिक ध्वनियों का प्रयोग करते हैं। भाषा मुख से उच्चारित होने वाले शब्दों और वाक्यों आदि का वह समूह है, जिनके द्वारा मन की बात बताई जाती है। किसी भाषा की सभी ध्वनियों के प्रतिनिधि स्वर एक व्यवस्था में मिलकर एक सम्पूर्ण भाषा की अवधारणा बनाते हैं। व्यक्त नाद की वह समष्टि, जिसकी सहायता से किसी एक समाज या देश के लोग अपने मनोगत भाव तथा विचार एक-दूसरे से प्रकट करते हैं; मुख से उच्चारित होने वाले शब्दों और वाक्यों आदि का वह समूह, जिनके द्वारा मन की बात बताई जाती है; जैसे–बोली, जबान, वाणी विशेष भाषा कहलाती है। इस समय सारे संसार में प्राय: हजारों प्रकार की भाषाएं बोली जाती हैं, जो साधारणत: अपने भाषियों को छोड़ और लोगों की समझ में नहीं आतीं। अपने समाज या देश की भाषा तो लोग बचपन से ही अभ्यस्त होने के कारण अच्छी तरह जानते हैं, पर दूसरे देशों या समाजों की भाषा अच्छी तरह सीखे बिना नहीं आती। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और भाषाई शक्ति के आधार पर वह सामाजिक प्राणी बन सका है। भाषा पर *(i)* संप्रेषण, *(ii)* सामाजिक व्यवहार और *(iii)* संरचनागत विशेषताओं की दृष्टि से विचार करना और भाषा के संबंध में विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं को समझना भी आवश्यक है।

अध्याय का विहंगावलोकन

भाषा की परिभाषा

सामान्यत: भाषा को वैचारिक आदान-प्रदान का माध्यम कहा जा सकता है। भाषा आभ्यंतर अभिव्यक्ति का सर्वाधिक विश्वसनीय माध्यम है। यही नहीं वह हमारे आभ्यंतर के निर्माण, विकास, हमारी अस्मिता, सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान का भी साधन है। भाषा के बिना मनुष्य सर्वथा अपूर्ण है और अपने इतिहास तथा परम्परा से विच्छिन्न है।

'भाषा' शब्द संस्कृत के 'भाष्' धातु से बना है, जिसका अर्थ है–बोलना या कहना अर्थात् भाषा वह है, जिसे बोला जाए।

प्लेटो ने 'सोफिस्ट' में विचार और भाषा के संबंध में लिखते हुए कहा है कि विचार और भाषा में थोड़ा ही अंतर है। विचार आत्मा की मूक या अध्वन्यात्मक बातचीत है और वही शब्द जब ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होते हैं, तो उसे भाषा की संज्ञा देते हैं।

डॉक्टर बाबूराम सक्सेना का मानना है, ''जिन ध्वनि चिह्नों द्वारा मनुष्य परस्पर विचार-विनिमय करता है, उनकी समष्टि को भाषा कहते हैं।''

स्वीट के अनुसार ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों को प्रकट करना ही भाषा है।

भाषा यादृच्छिक वाचिक ध्वनि-संकेतों की वह पद्धति है, जिसके द्वारा मानव परम्परा से विचारों का आदान-प्रदान करता है। स्पष्ट ही इस कथन में भाषा के लिए चार बातों पर ध्यान दिया गया है–

(i) भाषा एक पद्धति है अर्थात् एक सुसम्बद्ध और सुव्यवस्थित योजना या संघटन है, जिसमें कर्ता, कर्म, क्रिया आदि व्यवस्थित रूप में आ सकते हैं।

(ii) भाषा संकेतात्मक है अर्थात् इसमें जो ध्वनियाँ उच्चारित होती हैं, उनका किसी वस्तु या कार्य से संबंध होता है। ये ध्वनियाँ संकेतात्मक या प्रतीकात्मक होती हैं।

(iii) भाषा वाचिक ध्वनि-संकेत है अर्थात् मनुष्य अपनी वागिन्द्रिय की सहायता से संकेतों का उच्चारण करता है, वे ही भाषा के अंतर्गत आते हैं।

(iv) भाषा यादृच्छिक संकेत है। यादृच्छिक से तात्पर्य है–ऐच्छिक अर्थात् किसी भी विशेष ध्वनि का किसी विशेष अर्थ से मौलिक अथवा दार्शनिक सम्बन्ध नहीं होता।

भाषा-संप्रेषण के रूप में

संप्रेषण, भावाभिव्यक्ति का ज्ञापन कराना है अर्थात् संदेश भेजने एवं ग्रहण करने की सार्थक क्रिया ही संप्रेषण है। मनुष्य अपने विचारों को प्रेषित करने के लिए भाषा एवं भाषेतर दोनों ही प्रकार के उपादानों का प्रयोग करता है। भाषा, मानव के अमूर्त विचारों की अभिव्यक्ति का सर्वोत्तम साधन है, जो संप्रेषण-व्यवहार में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण एवं समर्थ उपादान है। इसके साथ ही आंगिक चेष्टाओं के माध्यम से भी व्यक्ति अपने संदेश को अन्य व्यक्ति के पास प्रेषित करता है, किंतु मानव जीवन की जटिल से जटिल अभिव्यक्ति अर्थात्

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

ज्ञान-विज्ञान, अर्थव्यवस्था, राजनीति, शासन व्यवस्था, सामाजिक कार्य-व्यापार आदि की अभिव्यक्ति भाषा के वाचिक एवं लिखित रूप से ही संभव है। अत: संप्रेषण का तात्पर्य केवल विचारों का आदान-प्रदान ही नहीं होता है, बल्कि संप्रेषण द्वारा अनेक प्रकार के गूढ़ एवं अमूर्त सिद्धांतों का अर्थ ज्ञापन भी होता है। संप्रेषण के कई प्रकार हो सकते हैं–व्यक्ति और व्यक्ति के बीच, व्यक्ति और समाज के बीच, समाज और समाज के बीच आदि। आधुनिक वैज्ञानिक विकास के दौर में रेडियो, टी.वी, अखबार आदि संचार माध्यम संप्रेषण के वृहत् स्वरूप को उपस्थित करते हैं।

संप्रेषण का स्वरूप

संप्रेषण भाषा का नितांत आंतरिक पक्ष है। भाषा के माध्यम से मनुष्य अपनी सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है तथा अपनी आत्माभिव्यक्ति को लिखित या वाचिक रूप में भाषा के माध्यम से प्रकट कर समाज को संप्रेषित करता है। अत: भाषा के अध्ययन एवं विश्लेषण के संदर्भ में संप्रेषण के अध्ययन से उसके विविध पक्षों की जानकारी मिलती है। संप्रेषण द्वारा भाषा के सामाजिक स्तर-भेद से अवगत हुआ जा सकता है। आंगिक चेष्टाओं द्वारा प्रेषणीयता का अर्थ पूरी तरह से स्पष्ट नहीं हो पाता है, लेकिन बोलते समय ये आंगिक क्रियाएँ अभिव्यक्ति को मजबूती प्रदान अवश्य करती हैं। अत: संप्रषण का सबसे सशक्त माध्यम भाषा है तथा इस भाषिक संप्रेषण के भी कई पक्ष हैं, जो सामाजिक-सांस्कृतिक प्रकार्यों से संबंधित हैं अर्थात् भाषा की प्रयुक्ति संबंधी विशेषताएँ, जैसे–कार्यालय, विज्ञापन, प्रशासनिक कार्यों आदि के संदर्भ में भाषा का किसी खास अर्थ के सापेक्ष प्रयोग, संप्रेषण एवं भाषा के विविध प्रयोजनों को दर्शाती है।

संप्रेषण-व्यवहार में एक पूरी व्यवस्था कार्य करती है। वक्ता, श्रोता, माध्यम (वायु) तथा संदेश के होने पर ही संप्रेषण पूर्ण होता है, किंतु संपेषण का एक भौतिक पक्ष भी है, जिसमें माध्यम की विविधता के कारण संप्रेषण के स्वरूप में विस्तार हुआ है। आदिकाल में व्यक्ति-व्यक्ति के बीच संप्रेषण का व्यवहारजन्य उपयोग होता था, परंतु आधुनिक युग में व्यावसायिक प्रयोजनों ने संप्रेषण को संचार के व्यापक पटल पर उपस्थित कर इसे सामूहिक एवं वैश्विक रूप प्रदान किया है, जैसे–टेलीफोन, अखबार, रेडियो, इंटरनेट, टी.वी. इत्यादि।

समाज में भाषा का प्रयोग संप्रेषण के रूप में ही होता आया है, भले ही संप्रेषण के प्रयोजन अलग-अलग रहे हों। सम्राट अशोक अपने शिलालेखों के माध्यम से जनता को संप्रेषित करते थे तो कई राजाओं ने ताम्रपत्रों एवं मुनादी (नगाड़े की आवाज के साथ सूचना) के माध्यम से किसी विशेष अवसर पर विशेष सूचना देने का कार्य किया।

वस्तुत: संप्रेषण के 'विश्वग्राम' वाले कॉन्सेप्ट में अनेक स्वरूप हो गए हैं। फिर भी इसका मूल उद्देश्य संदेश को पहुँचाना ही रहा है। भाषा के अनुवाद का जब सवाल खड़ा होता है, तो संप्रेषण को ही ध्यान में रखकर उसे अनूदित किया जाता है।

प्रतीक व्यवस्था

भाषा को 'यादृच्छिक ध्वनि-प्रतीकों' की व्यवस्था कहा जाता है। भाषा समाज में आपस में विचार-विनिमय के लिए प्रयुक्त होती है। भाषा प्रतीकात्मक होती है और इसका कार्य संप्रेषण करना होता है। इसके प्रतीक संकल्पना के रूप में साधारणीकृत होते हैं और संप्रेषण के रूप में भावों एवं विचारों का बोधन कराते हैं। स्विस विद्वान सस्यूर के अनुसार प्रतीक का संबंध संकेतित वस्तु और संकेतार्थ से होता है। संकेतित वस्तु के अर्थ उन भौतिक और यथार्थ वस्तुओं के साथ जुड़े होते हैं, जो गैर-भाषायी तथा वास्तविक जगत् की होती हैं। उस यथार्थ वस्तु का मानव मस्तिष्क में जो चित्र बनता है, वह संकल्पना मनोवैज्ञानिक, बौद्धिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, जातीय और परंपरागत परिवेशों से संबद्ध होती है।

ध्वनियों का सार्थक और स्वतंत्र समूह प्रतीक हैं–(1) प्रतीक के रूप में गृहीत शब्द या वाक्य की संकल्पना निर्दिष्ट वस्तुओं या भावों को अपने भीतर समेट लेने की सामान्यीकृत मानसिक यथार्थता होती है। इसे 'भाषिक प्रतीक' कहा जाता है। उदाहरण के लिए, हमारे सामने यथार्थ वस्तु 'पेड़' है, जिसके रूपाकार की संकल्पना मानव-मस्तिष्क में बैठ गई है और ध्वनियों के संयोजन से यह भाषिक प्रतीक बन गया है।

संकेतित वस्तु और प्रतीक का संबंध मानसिक होता है, क्योंकि यह वक्ता और श्रोता के मस्तिष्क में संकल्पना के साथ रहता है, लेकिन प्रतीक और यथार्थ वस्तु के बीच संकल्पनात्मक संबंध नैसर्गिक या प्राकृतिक न होकर यादृच्छिक होता है, इसलिए विभिन्न भाषाओं में विभिन्न शब्दों का प्रयोग होता है। उदाहरण के लिए, हिन्दी का शब्द 'घोड़ा', संस्कृत में शब्द 'अश्व', अंग्रेजी में 'हॉर्स', चीनी में 'मा', रूसी में 'कोल्य' और फ्रेंच में 'शेवल' कहलाता है। यथार्थ वस्तु, संकल्पना और प्रतीक का संबंध अनिवार्य रूप से स्थानवाची, कालवाची, सामाजिक-सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक कई रूपों में दिखाई देता है। परिवेश के अनुरूप इनके अर्थ भी बदल जाते हैं। कभी-कभी संकल्पना भी प्रतीक रूप में अनुपस्थित वस्तु का रूप धारण कर लेती है, जैसे–स्वर्ग, नरक, अमृत आदि प्रतीक परंपरागत संस्कार-सापेक्ष या समाज-संदर्भित होते हैं और इनकी अपनी मानसिक संकल्पना निर्धारित हो जाती है।

संकेतित वस्तु, संकेतार्थ और प्रतीक के संबंधों के आधार पर कहा जा सकता है कि भाषिक प्रतीक कथ्य और अभिव्यक्ति की समन्वित इकाई है। इसमें इन दोनों पक्षों का होना अनिवार्य है। प्रतीक के लिए कथ्य और अभिव्यक्ति का अटूट संबंध है। इसी संबंध के कारण प्रतीक अपने-आप में सिद्ध हैं, लेकिन व्यक्ति-विशेष या समाज-विशेष के लिए असिद्ध हो सकते हैं। कथ्य के स्तर पर अर्थ के कई आयाम होते हैं–बोधात्मक, संरचनात्मक, सामाजिक और सांस्थानिक। एक ही प्रतीक में कम-से-कम एक या दो अर्थ मिल जाते हैं। उदाहरणत: 'जलज' और 'नीरज' दोनों का बोधात्मक अर्थ 'कमल' है, लेकिन उससे जो अन्य अर्थ निकलता है, वह विषय-वासनाओं से अप्रभावित रहने का संकेत देता है। अनेक बार दो या तीन अभिव्यक्तियों में एक ही अर्थ या कथ्य पाया जाता है। वस्तुत: कथ्य और अभिव्यक्ति में जो अटूट संबंध है, उसमें लचीलापन भी है। इसी कारण हर भाषा में अनेकार्थी अथवा संदिग्धार्थी और पर्यायवाची शब्द या वाक्य मिल जाते हैं।

वाक्य के धरातल पर तीन वाक्य देखें–

(क) रिया ने पतले लड़के को भोजन दिया।

(ख) रिया ने जिस लड़के को भोजन दिया, वह पतला है।

(ग) रिया ने उस लड़के को भोजन दिया, जो पतला है।

इन तीनों अभिव्यक्तियों ने एक ही अर्थ का प्रतिपादन किया है, किंतु वाक्य संरचना भिन्न है।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

भाषा कई प्रयोजनों की सिद्धि करती है। अत: समाज में प्रतीक हेतु का काम करते हैं। समाज का अर्थ वह भाषा-भाषी समुदाय है, जिसके अपने सामाजिक स्तर होते हैं, सांस्कृतिक रीति-रिवाज और परंपराएं होती हैं। यह समाज अपनी भाषा में कार्य-व्यापार करता है। इसमें समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक, परंपरागत, मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक, प्रयोजनपरक आदि विभिन्न परिवेश या संदर्भ जुड़े होते हैं। भाषा-प्रतीकों से हमारे सामाजिक और पारिवारिक संबंधों की जानकारी के साथ-साथ वक्ता-श्रोता के अंतर्वैयक्तिक संबंधों की जानकारी भी मिलती है। उदाहरण के लिए, सांस्कृतिक परिवेश में 'पुष्प', 'कलश', 'अक्षत' आदि शब्दों का जो प्रयोग होता है, उनके स्थान पर फूल, लोटा, चावल आदि शब्दों या पर्यायों का प्रयोग निषेध है। इस प्रकार, भाषा का मुख्य प्रकार्य संप्रेषण है, जो अपनी संरचनात्मक व्यवस्था में सामाजिक परिवेश, सांस्कृतिक रीति-रिवाज, परंपराओं आदि को अभिव्यक्त करती है।

प्रतीकों के निर्माण का आधार–प्रतीकों के निर्माण के लिए संप्रेषण में निम्नलिखित आधारों की आवश्यकता है–

(1) वक्ता और
(2) श्रोता (दोनों सजीव प्राणी)
(3) माध्यम (भौतिक)
(4) माध्यम द्वारा प्रेषित प्रतीकों की कोड व्यवस्था (अमूर्त)
(5) कोड में बँधे संदेश को श्रोता तक पहुँचाया जा सके।

मानव संप्रेषण के घटक–

1. **वक्ता (मनुष्य)/श्रोता (मनुष्य)**–बातचीत के दौरान एक व्यक्ति बारी-बारी वक्ता और श्रोता की भूमिकाएँ निभाता है।
2. **माध्यम**–(मुँह से निकली, ध्वनि तरंगों द्वारा संचारित, कानों द्वारा ग्रहण की गई ध्वनियाँ)
3. कोड व्यवस्था (हमारी भाषा)
4. संदेश (सामाजिक प्रयोजनों की सिद्धि के लिए।

भाषा : सामाजिक व्यवहार के रूप में

मनुष्य का समाज के सदस्य के रूप में दूसरे सदस्य के प्रति व्यवहार सामाजिक व्यवहार है, जैसे–कक्षा में अध्यापक के आने पर अपनी सीट से खड़े हो जाना। भाषा सामाजिक व्यवहार का एक साधन है, जिससे मनुष्य को दूसरों के साथ संपर्क करने में सहयोग मिलता है।

भाषा जन्मजात गुण नहीं है, न ही पैतृक संपत्ति है। हालांकि प्राणियों की आवाजें जन्मजात प्रवृत्ति है। किसी प्राणी के बच्चे को जन्म से ही अलग रखा जाए, तो वह भी अपने को अभिव्यक्त करने के लिए वे ही ध्वनियाँ निकालेगा, जो उसके वर्ग के लिए सामान्य हैं। दूसरे शब्दों में, कोई भी प्राणी वर्ग अतिरिक्त रूप से प्रतीकों का निर्माण भी नहीं कर सकता, जबकि कई परीक्षणों से सिद्ध हो चुका है कि कोई भी मानव शिशु एकांकी रहकर कोई भाषा नहीं सीख सकता। वह समाज से ही भाषा सीख सकता है। भाषा पैतृक भी नहीं है। बच्चा जिस समाज में पलेगा उसी समाज की भाषा सीखेगा। भाषा समाज में बने रहने का साधन है और समाज से ही अर्जित होती है।

भाषा सामाजिक व्यवहार है

समाज के सदस्य के रूप में मनुष्य का व्यवहार सामाजिक व्यवहार कहलाता है, जैसे–नमस्ते करना, पहनावा, खान-पान, रहन-सहन आदि। सामाजिक व्यवहार प्रत्येक समाज में अलग-अलग होते हैं, जैसे–अधिकतर भारतीय हाथ जोड़कर अभिवादन करते हैं, तो अंग्रेज हाथ मिलाते हैं अर्थात् हमारी सामाजिक परंपरा अथवा रूढ़ि ही सामाजिक व्यवहार है। इस दृष्टि से सामाजिक व्यवहार भी भाषा के प्रतीकों की तरह यादृच्छिक व्यवस्था है।

भाषा एक सामाजिक व्यवहार है और विभिन्न प्रकार के सामाजिक व्यवहारों का प्रयोजन एक ही है–अर्थ संप्रेषण। अर्थ संप्रेषण के लिए शारीरिक व्यापारों की तुलना में भाषा अधिक उपयुक्त माध्यम है, क्योंकि जटिल विचारों की अभिव्यक्ति भाषा से ही संभव है।

अर्थ संप्रेषण सामाजिक आवश्यकता है अर्थात् हम अपनी आवश्यकताओं को अभिव्यक्त कर सकते हैं, जैसे–कुछ माँगने के लिए अनुनय-विनय करना, दूसरों के कार्य की निंदा या प्रशंसा करना अथवा सहमति या सुझाव देना। सामाजिक प्राणी होने के नाते ये सब व्यापार आवश्यक हैं और इन्हें भाषा के माध्यम से बखूबी निभाया जा सकता है।

चिंतन सामाजिक व्यवहार के लिए व्यक्ति की निजी भूमिका है अर्थात् चिंतन भी भाषा द्वारा संप्रेषण का ही एक रूप है। वर्तमान में समाज की समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति भाषा द्वारा होती है। भाषा के बिना संस्कृति संभव नहीं। चूंकि भाषा के माध्यम से ही किसी समाज के धार्मिक विचार, ज्ञान-विज्ञान का भंडार, साहित्य, सभी पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ते हैं। अत: समाज की सांस्कृतिक धरोहर की वाहक भाषा ही है।

भाषा व्यक्तित्व एवं भौतिक संस्कृति के विकास का आधार भी है। उदाहरणत:, किसी वस्तु के निर्माण में अनुभव मनुष्य द्वारा संचित ज्ञान है, जो भाषा के माध्यम से ही समाज को विरासत में मिलता है। भाषा संस्कृति की पोषिका है।

समाज में भाषा

समाज की संरचना पर सामाजिक व्यवहार निर्भर करता है। सामाजिक संरचना के अनुसार ही समाज का एक सदस्य विविध सामाजिक भूमिकाएँ होती हैं। उदाहरण के लिए, एक ही पुरुष द्वारा पिता, पुत्र, पति, भाई, पड़ोसी, मित्र, गुरु, शिष्य, अधिकारी, अधीनस्थ कर्मचारी आदि भूमिकाएं निभाता है। भूमिकाओं के अनुसार व्यक्ति सामाजिक व्यवहार भी बदलता है। उदाहरण के लिए, समान आयु वाले से प्रणाम करते हैं, तो बड़ों के चरण स्पर्श करते हैं, बच्चों या अपने से छोटों को आशीर्वाद देते हैं। भाषा में संबोधन की विविध शैलियों द्वारा ये भिन्नताएँ प्रकट होती हैं। विविध वार्ता शैलियां यह विभिन्नता प्रकट करती हैं–

(i) अंतरंग शैली–सुनते हो, जरा इधर आना।
(ii) अनौपचारिक–जरा इधर आओ।
(iii) सामान्य शैली–कृपया इधर आइए।
(iv) औपचारिक-यदि कष्ट न हो तो इधर आएँ।
(v) रूढ़ शैली–मेरा निवेदन है कि इधर आने की कृपा करें।

सामाजिक व्यवहार में विभिन्नता जीवन के विभिन्न सामाजिक क्षेत्रों से संबंधित है। मानव अपने जीवन में एक साथ विविध सामजिक क्षेत्रों-घर, परिवार, पड़ोस, स्कूल, कॉलेज, खेल-क्रीड़ा, आमोद-प्रमोद, बाजार, कार्यालय, न्यायालय, फैक्टरी, धर्मस्थल आदि में सामाजिक भूमिका निभाता है। इन विविध क्षेत्रों में एक ही मनुष्य भिन्न-भिन्न सामाजिक व्यवहार करता है। सामाजिक क्षेत्र की विभिन्नता के कारण ही व्यक्तियों का पहनावा भिन्न होता है, जैसे–एक डॉक्टर,

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

एक वकील, एक पुलिस वाला आदि सभी की सामाजिक भूमिका के कारण परिधान भिन्न है। भाषा के साथ इसकी समानांतर स्थिति है। एक हिंदी भाषी व्यक्ति घर में अनौपचारिक व्यवहार में हिंदी, औपचारिक स्थिति में अंग्रेजी और पूजा-पाठ के लिए संस्कृत का प्रयोग करता है। सभी सामाजिक क्षेत्रों में व्यक्ति एक समान शब्दों का प्रयोग नहीं करता। घर में आत्मीयता दिखाने वाले शब्दों का, तो कार्यालय में सरकारी कामकाज में प्रयुक्त अकर्मक क्रिया (आपको सूचित किया जाता है) से युक्त बँधे हुए और अखंडित वाक्य आदि दिखाई पड़ते हैं।

सामान्य बोलचाल की बोली से स्पष्ट रूप से पर्याप्त भिन्न होती है और लोग उसे सुनते या पढ़ते ही बता देते हैं कि यह अमुक क्षेत्र की भाषा है। बहुभाषिकता सामाजिक क्षेत्रों में बहुत-सी प्रयुक्तियों की उपस्थिति के कारण उत्पन्न होती है।

भाषा में परिवर्तन

अर्थ की दृष्टि से भी भाषा में परिवर्तन आए हैं, जैसे–पहले मुनि के योग-व्यवहार को 'मौन' कहते थे, अब 'मौन' का अर्थ चुप रहना है। सामाजिक व्यवहारों में भिन्नता अन्य संस्कृतियों के संपर्क से भी आती है। जैसे समय के अनुसार अपनी वेशभूषा के साथ विदेशी वेशभूषा को भी अपना लिया गया है, उसी प्रकार भाषा के संबंध में भी ऐसी ही स्थिति है। जैसे हिंदी में फारसी, अंग्रेजी से शब्द आने पर संस्कृत शब्द प्रचलन से बाहर हो गए हैं।

सामाजिक व्यवहार के रूप में भाषा की स्थिति भाषा की निम्नलिखित प्रकृति को स्पष्ट करने में सहायक है–

1. भाषा जन्मना प्राप्त नहीं होती, यद्यपि भाषा सीखने की क्षमता प्राकृतिक है।
2. भाषा के तत्व यादृच्छिक होते हैं।
3. भाषा में अनेकरूपता होती है।
4. भाषा सदैव परिवर्तनशील है।

भाषा-संरचना के रूप में

रचना में कई भाग जुड़कर जब एक वस्तु या इकाई बनाते हैं, तो उसे संरचना कहते हैं। भाषा भी अनेक भिन्न तत्वों से बनी एक संरचना है।

संरचना का तात्पर्य

संसार की सभी वस्तुएं एक से अधिक अवयव अथवा कारक अथवा घटक अथवा संरचकों के एक विशेष क्रमबद्ध संयोजन से उत्पन्न हुई हैं। उदाहरण के लिए, कार की संरचना को लेते हैं। सभी संरचनाओं के समान कार के भी अनेक संरचक या अवयव या घटक होते हैं। मोटे तौर से एक फ्रेम, स्टेयरिंग, सीट, पहिये, शीशे, ब्रेक, क्लच आदि होते हैं। इन संरचकों का कार की संरचना में अपना-अपना महत्त्व या प्रकार्य है। अत: किसी भी संरचना के सभी संरचकों का कोई-न-कोई कार्य/प्रकार्य होता है।

संरचकों की संख्या और संरचकों के प्रकार्यों के अतिरिक्त प्रत्येक संरचक का पूरी संरचना में विशेष स्थान होता है। कार का स्टेयरिंग आगे की ओर लगाया जाएगा, सीट हैंडिल की तुलना में पीछे होगी, पहिये नीचे होंगे। इस प्रकार भाषा में संरचकों की– *(i)* संख्या, *(ii)* प्रकार्य और *(iii)* स्थान निश्चित होने के साथ उनकी *(iv)* क्रमबद्धता भी निश्चित होती है।

संरचना-प्रक्रिया में क्रमबद्धता के साथ सोपान क्रम का भी महत्व है अर्थात प्रत्येक सोपान क्रम में अनेक सोपान होते हैं, जैसे– एक-एक सीढ़ी (सोपान) चढ़ते हुए हम किसी भवन में ऊपर जाते हैं, इसी प्रकार सामाजिक जीवन में बहुत से स्थानों पर सोपान-क्रम दिखाई पड़ता है। जैसे एक कार्यालय की व्यवस्था में नीचे के सोपान पर क्लर्क, उससे ऊँचे सोपान पर असिस्टेंट, उससे ऊपर सुपरिटेंडेंट, उससे ऊपर मैनेजर, डायरेक्टर आदि नियुक्त होते हैं। कार्यालय में कार्यरत एक कर्मचारी की पदोन्नति भी इसी सोपान-क्रम में होती है। सोपान-क्रम बढ़ने के साथ-साथ अधिकार की शक्ति भी बढ़ती जाती है।

संरचना के सोपान-क्रम में प्रत्येक संरचक अपने से ऊपर के संरचक का अंग है, किंतु अपने से नीचे के संरचकों का अंगी (स्वामी)। वस्तु अथवा संगठन जितना जटिल होगा, सोपान-क्रम में उतने ही अधिक सोपान होंगे। किसी भी संरचना को भली-भाँति समझने के लिए इन पाँचों घटकों को समझना अत्यावश्यक है।

भाषा की संरचना

भाषा भी एक संरचना है। वाक्यों से ही हम अपनी बात किसी तक पहुंचा सकते हैं, किंतु वाक्य की संरचना के सभी घटक सम्मिलित होने पर ही वह वाक्य पूर्ण और अर्थ-सम्प्रेषण में सफल माना जाएगा, जैसे–

बच्चे खाली जमीन में दोपहर को पौधे लगायेंगे।
(i) *(ii)* *(iii)* *(iv)* *(v)*

इस वाक्य संरचना में सभी संरचकों के अपने-अपने प्रकार्य हैं–*(i)* प्रकार्य कर्ता का, *(ii)* प्रकार्य क्रम का, *(iii)* प्रकार्य क्रिया का, *(iv)* प्रकार्य स्थान की सूचना का और *(v)* प्रकार्य 'समय' की सूचना देने का।

स्थान की दृष्टि से हिंदी वाक्य-संरचना में सबसे पहले स्थान पर कर्ता आता है, उसके बाद कर्म और सबसे अंतिम स्थान पर क्रिया होती है। 'स्थानसूचक' और 'समयसूचक' क्रिया के पूर्व और पश्चात् आ सकते हैं, किंतु सामान्यतया कर्ता और कर्म के बीच आते हैं।

यह वाक्य स्थान-क्रम में बद्ध है। इस शृंखला-बंधन में क्रिया मुख्य होती है, जो कर्ता, कर्म आदि को बाँधे रखती है। सोपान-क्रम के प्रमुख सोपान हैं–

(1) वाक्य-/बच्चे खाली जमीन में दोपहर को पौधे लगायेंगे।
(2) पदबंध-/बच्चे// खाली जमीन (में)//दोपहर को//पौधे// लगायेंगे/
(3) शब्द-/बच्चा (ए)//खाली जमीन (में)//दोपहर (को)// पौधा (ए) // लगा (एंगे)
(4) शब्दांश-/बच्चा // ए // खाली // जमीन // में // दोपहर // को // पौधा // ए // लगा // एंगे/

भाषिक संरचनाएँ

भाषाई संरचना की प्रक्रिया वस्तुओं की संरचनाओं से अधिक जटिल, सूक्ष्म और अमूर्त होती है। उदाहरण के लिए, 'क' पेड़ के ऊपर एक पक्षी देखता है और वह इसकी जानकारी 'ख' को देना चाहता है। दोनों का समान कोड है। अब 'क' इन संप्रत्ययों के लिए सबसे उपयुक्त शब्द शब्दांशों को चुनेगा। उसके सामने संप्रत्यय है पक्षी, पेड़ (स्थूल वस्तुएँ हैं)। इसके लिए वह शब्दकोशीय शब्दों अथवा व्याकरणिक शब्दों/शब्दांशों खोजता है। भाषा हिंदी है, इसलिए क्रमश: पक्षी (शब्दकोशीय शब्द), के ऊपर (व्याकरणिक शब्द) है (अस्तित्व वर्तमान एकवचन) होंगे। वाक्य-संरचना के नियमों के अनुसार संरचित करने पर वाक्य बना। यह वाक्य अमूर्त है और इसे

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com